ई पत्रिका | अक्टूबर 2022

महापुरुषों की जयंतियाँ

डॉ० सर्वेश कुमार दुबे
निर्देशक

आशीष यादव(संकलनकर्ता) | बी.ए. प्रोग्राम (तीसरा सेमेस्टर)

शिवाजी महाविद्यालय | दिल्ली विश्वविद्यालय

महापुरुषों की जयंतियाँ

महापुरुषों का जन्म दिवस कर्म की प्रेरणा देता है। इस दिन को अवकाश घोषित करना गलत माना जा सकता है। अवकाश मनोरंजन का प्रतीक माना जा सकता है। महापुरुषों का कर्म जागरण का प्रतीक कहा जा एकता है। अवकाश निद्रा कर प्रतीक । अतः हमे महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। हमें जागरण चाहिए। अन्धकार, अवकाश का प्रतीक है। महात्मा गाँधी, पटेल, सुभाष, भगत सिंह , अब्दुल कलाम के जन्मदिवस से कर्म के प्रति जागूरूक होना चाहिए |

इन्हीं अनुभूतियों को बी० ए० प्रोगाम के तीसरे सेमेस्टर के क्यार्थियों ने कविता के रूप में प्रस्तुत किया। रचनात्मक लेखन प्रस्न पत्र के अध्ययन के दौरान महापुरुसो के जन्म दिवस पर अवकाश होना चाहिए | प्रस्न चर्चा में आया था। उसी चर्चा में उठे प्रस्न को विद्यार्थियों ने स्वरचित कविताओं के रूप में अभिव्यक्त किया है। ई-पत्रिका का रूप देने में **आशीष यादव** ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करण हैं

डॉ० सर्वेश कुमार दुबे
हिन्दी विभाग
शिवजी कालेज, दिल्ली।

महापुरुषों की कथा है , तो आओ इन्हें हम याद करें।
देश-समाज के उत्थार में , जो इन्होंने कार्य करें ।।

चाहे बात करो बापू की , या हो सरदार पटेल।
इन वीरों के उद्यम से ही आज़ाद है अपना देश ॥

बात करो अब्दुल कलाम की, मौलाना आजाद की।
जीवन- प्रेरणा से जयकार हुई, भारत देश महान की।

इन वीरो से प्रेरित होकर, आओ हम सब साथ चलें।
अगली पीढ़ी गर्व करें, आओ ऐसे हम कुछ कार्य करें।

महापुरुषों की कथा "है, तो आओ इन्हें हम याद करें।
देश-समाज के उत्पार में, जो इन्होंने कार्य करें।

निधी द्विवेदी
21/49216

बकते हैं अश्लील शब्द,
भाषा को स्वच्छ रखा नहीं।

व्यसनभाव से भरे हुए,
मन को स्वच्छ रखा नहीं।
मलिन धरा को करते हैं,
वतन को स्वच्छ रखा नहीं,

हर तरह का सुधार करने..
महापुरुष नहीं आएँगे,
कुछ कर्त्तव्य हमारे भी हैं..

कुछ सुधार क्या अपने अंदर
हम भी लाएँगे...

आशीष यादव
21/49309

इन महापुरूषों को मेरा प्रणाम,
जो सिखाते है हमे प्रेम,
अहिंसा एवं सत्य का पाठ।

"जियो और जीने दो' महामंत्र को अपनाएं,
हिंसा को छोड़ अहिंसा को अपनाएं।

महापुरुषों की इस जयंती पर उनके
उपदेश सुनाता हूँ।
कभी किसी से झूठ मत बोलो..
सत्य के लिए सदा अपना मुँह खोलो।

शत्रु-मित्रता का भाव छोड़कर सहज,
प्रेम सेगले लगाया,इन महापुरूषों
ने हमे अच्छाई की राह पर चलना सिखाया।

हर जीव से जिसने प्रेम करना सिखाया,
दीन दुखियों को सम्मान दिलाया:
सत्य अहिंसा के मार्ग पर चलकर,
पूरी दुनिया ने उन महावीर पुरुषों
सामने शीश झुकाया।

महापुरुषों की जयंती के दिवसपर,
'करती हूँ मैं वन्दन
हे, नवयुग। के महापुरूष
तेरा शुभ अभिनन्दना

रिधिमा मनचंदा
21/49126

भारत है वह पुण्य धरती,
जहाँ जन्म लिया अनेक महापुरषों ने,
मानते हैं हम हर वर्ष उनकी जयंती |
विश्वविख्यात है गौतम बुद्ध और कबीर,
प्रसिद्ध है महाराणा प्रताप,
चौहान और शिवाजी जैसे वीर |

गूंज रहा है समस्त विश्व में,
विवेकान्द, दयानंद, ईश्वरचंद का सन्देश,
नई दिशा में ले आये,
गाँधी, सुभाष और जवाहर यह देश |

हो चिन्नमा, हो जिजाबाई,
या फ़िर हो लक्ष्मीबाई,
जिनके प्राण और प्रतिज्ञा,
देश की मिट्टी के, कण-कण में है समाई |

बलिदानों से इस भूमि को,
जिन्होंने महानतम है बनाया,
उनसे प्रेरणा पाते हैं हम,
उनकी निःस्वार्थ सेवा को,
कोटि-कोटि नमन करते हैं हम,
और हर वर्ष उनकी जयंतियां,
उनके सम्मान में मनाते हैं हम

महक खजूरिया
21/49254

था बचपन का नाम नवाब,
प्रेमचंद का मिला खिताब।
धनपतराय घरेलू नाम,
लमही में था उनका धाम।।

बचपन से ही मिली गरीबी,
अंत काल तक चली गरीबी।
लेकिन कभी ना हिम्मत हारे,
बने देश के उज्जवल तारे।।

किस्सा और कहानी पढ़कर,
कुछ अपनी ही पीड़ा गढ़ कर।
सोच समझकर कलम चलाई,
उनके निकट सफलता आई।।

सीधे-सादे गांधीवादी,
वेष और भूषा थी सादी।
हंसते तो धरती कंप जाती,
वे हंसकर जीने के आदी।।

लिखी गांव की बहुत कहानी,
उनकी पीड़ा ,उनकी वाणी।
जीवन के आदर्श बताएं,
नए पुराने रूप दिखाएं।।

अंकित कुमार
21/49427

याद करो उन वीरो को
जिनके बलिदानों से
आज मिला आज़ादी का दिन ख़ास।।

याद करो उन वीरो को
जिन्होंने किए अथक प्रयास

कुछ कर देने का उनका संकल्प
आज यह दिन लाया है ।

क्या खूब करेगा प्रगति देश
यह दिन एक अवकाश के भाँति छाया

हम नमन करे उन वीरो को
कर देश कल्याण का प्रयास ।

हम कार्य करे निष्काम बिन माँगे
उनकी जयंती पर अवकाश

नितिन शर्मा
21/49233

सरदार वल्लभ भाई पटेल
ख़ुश्बूसेजिसकी महका सारा हिंदुस्तान

वो थेवल्लभ भाई पटेल भारत की शान ।
प्रतिभाशाली , वायक्तितव के धनी थेसरदार

भारत की आज़ादी के नायक थेमहान ।
बार्डोली सत्यागृह की सफलता के बाद

सरदार की उपाधि वाह की महिलाओं नेदी
दुश्मनों के लिए लौह पुरुष थेसरदार पटेल

इनको मरणोपरांत भारतरत्न की उपाधि दी ।
हृदय कोमल आवाज़ मेंसिंह सी दहाड़ थी

भारतीय राजनीति के प्रखंड विहान थे।
शत्शत्नमन एसेमहान वयक्ति को
वेभारत की आन बान और शान थे।

यश खत्री
21/49277

असंख्य वीरों के बलिदानों से,
यह राष्ट्र हुआ आज़ाद,
उनके स्वतः नाम पर ही
है आज पुनः अवकाश ।

तुंग हिमालयों से वे वीर अंचल
हर कालखंड में हैं जो अडिग, अमर,
स्वतंत्रता के दुर्गम राहों पर न सानी जिन
उनकी जन्मतिथि, अकर्मण्यों के लिए है

वर्षों पूर्व लहू में खेल
अंतिम स्वास इस माटी को भेंट,
दी प्राणों की आहुति क्यों ?
नित दिन राष्ट्र सुधार में

जन्मतिथि के दिन उनके
क्यों करे अवकाश की घोषणा,
दो प्रहर कार्य और देशहित में
इसी रूप करें प्रकट संवेदना ॥

अमन वर्मा
21/49455

सत्य अहिंसा का था पो पुजारी
कभी ना जिसने हिम्मत हारी [गांधी जी की कविता]
साँस दी हमें आजादी की
जन जन है जिसका बलिहारी।

[नेहरूजी की कविता]
आजकल में फूल लगाते थे,
हमेशा मुस्काते थे
देश विदेश घूमने जाते थे,
बहुत सारी जानकारियां लाते थे
बच्चो से प्यार जताते थे.
इसलिए प्यारे चारा नेहरू कहलाते थे.

पे कहाँ गए , कहाँ रहे
ये धूमिल अभी कहानी है।
हमने तो उसकी नयी कथा
आजाद फौज संजानी है [नेताजी की कविता]

जिसमे उबाल का नाम नही।
वह मूल कहो किस मतलब का , आ सके देश के काम नही
वह खून कहो किस मतलब का , जिसमें जीवन, नखानी है
वह खून कहो किस मतलब का , वह खून नही, पानी है
जो परवरा होकर बहता है ,

तिलक नाम है एक से वीर का
गर्जना सुन कर इनकी ब्रिटिश डर जाते थे
शिक्षक नेता, क्रांतिकारी बनकर,
तिलक ने देश को लोकतंत्र का पाठ पढ़ाया। [बालगंगाधर तिलक]
लोकमान्यता क्यों जरूरी है हमारे लिए
देशवासियों को बड़े प्रेम से समझाया,
सबसे पहले शिक्षित नेता थे,
सबसे पहले लोकमान्य के पिता

[गौतम बुद्ध]

क्रोध को शांति से जीतो
बुराई को अच्चाई से जीती
कंजूसी को दरियादिली से
जीतो और असत्य बोलने वाले
को सत्य बोलकर जीतो।

हम जो काम करते हैं.
उसमें भक्ति का भाव होना चाहिए
ऐसे काम मे के सफलता साथ
सुख शांति भी मिलती है।

अमीषा कुमारी
21/49144

सीमाओं के आगे देखना जिन्होंने हमे सिखाया है,
महापुरुषों के आदर्शो ने इतिहास रचाया है

कण कण इस धरती का अभार रहेगा नाम-काम,
उन महापुरुषों का बेशुमार रहेगा |

कलम हो कलाम की यह अज़ादी हो अज़ाद की,
कहानी हो प्रताप की यह लता जी के अलाप की,
कदम हो कल्पना की यह स्थाही रविन्द्रनाथ की,
जंग हो हथियारों की यह गजल ए गुलजार की।

इन सभी के बलिदान से धरती भी उल्लास भरेगी,
नए बतोही के लिए थे मार्गदर्शन की आस रहेगी।

ज्ञान के दीपक को उजागर रखा महापुरुषों के,
मिसालों ने उनके बलिदानों ने त्यागों ने

आराधना सिंह
21/49247

एक युवा सन्यासी जिसने
सोच बदल दी दुनिया की

निर्धन-शोषित-पीड़ित के प्रति ,
जिसके मन में करुणा थी।

वह नरेन्द्र' से बना विवेकानंद,
तभी इस जग ने जाना।

इनकी प्रतिभा, इनकी मेधा
का सबने लोहा माना।

इन्होंने इस दुनिया को बताया ,
एक देश है भारत भी।
'भाई - बहन का संबोधन जब,
इस जग ने पहली बार सुना।

अमेरिका की धर्म-सभा का

थमी नही तालियाँ पर तवा,
उसकी ऐसी धाक जमी

ख्वाहिशें कुछ अधूरी रह गई,
बातें कुछ जरूरी रह गई।

वो दूर हो गए पर पास हमेशा रहेगें,
एहसास उन्हें हम हमेशा करेंगे।

फर्ज़ का सही तर्क दे गए
वो सबको छोड़ पीछे,
बस कुछ यादें शेष दे गए वो।

अधूरी अब भी कुछ रातें रह गईं,
ना जानें जिंदगी की,
कितनी मुलाकातें रह गईं।
ख्वाहिशें अब भी कुछ अधुरी हैं.

पर बातें हैं कुछ, जो करनी बाकी रह

अमन कुमार
21/49361

वह सरदार पटेल चाहिए
जो किसानों के हक की बात करे,
इनके दु:ख दर्द मिटाने के लिए लडे,
ईमानदारी और विनम्रता की बातें सब करें

यह सरदार पटेल चाहिए
जो अपनी आखों को क्रोध से लाल करे
अन्याय के खिलाफ मजबूत हाथों से लडे,
जिसकी आवाज से दुश्मन भी काँप उठेग

यह सरदार पटेय चाहिए
जो भारत को एकता का पाठ पढाये
हर मजस्तों को गले मिलने था सबक सिखाये
जो हर वक्त सय के साथ खड़ा रहकर दिखायें।

वह सरदार पटेल चाहिए
जो देश के लिए कुर्बानि हो,
जिसका हृदय विशाल हो',
आने वाली पीढ़ियों के लिए निशाल हो

वह सरदार पटेल चाहिए
देश की भाव थी जिसके रंग में
सबल बने भारत इस जग
मे एकीकरण के स्वप्न को जिसने
यथार्थ मे बदल दिया, भुजबल सै

सत्य के खातिर जंग लड़ी,
बिना उठाए हथियार पूर्ण,
स्वराज के खातिर छोड़
जीवन के विषय विकार

अन्याय के शासन को उखाड़ फेंकने का
लगा था वह आज़ादी का दिन खास,
न स्वार्थ किया न पक्ष किया
किया अथक प्रयास।

गिने अगर उन वीरों को,
तो लंबी सूची पुरानी है,
सबका लक्ष्य यही बजें कि,
भारत को आज़ादी दिलाई है।

मानसी सिरोही
21/49274

आज पुनः अवकाश है
शिक्षा थोड़ी निराश है
सेवावृत्ति हो या कर्मठता
सभी इस काल हताश है

नहीं आज रविवार नहीं
माह का दूसरा शनिवार नहीं
एक महापुरुष की है जयंती
संस्थान खोलने का अधिकार नहीं

खोले तो अधिकारों का हनन है
यहीं तो लोकतंत्र का पतन है
"महनीय का अपमान नहीं सहेंगे"
ऐसा जनमानस का कथन है

यह समय पूज्यों के नाम है
कदाचित उनका यहीं इनाम है
जिन्होंने दिन-रात निरंतर सेवा दी
आज उनके नाम का भी विश्राम है

जिन्होंने किया ज्ञानपथ प्रदर्शित
आज शिक्षा में विराम उन्हें समर्पित
जिन्होंने श्रम को आधार माना
आज श्रम ही उनके नाम से बाधित

स्वतन्त्रा के संघर्ष इनके किए
यह विकास के पुष्प जिनके दिए
जिन्होंने प्राण दिए देशहित में
दो क्षण का मौन रखा उनके लिए?

भारत की महान जनता सुनो
राष्ट्र हेतु सभी कर्ता जुड़ो
विभूतियों की आत्मा पुकारती
निद्रा त्याग लाओ सजगता, उठो

अभिलाषा नहीं थी पुष्पाजंलि
या निर्मित हो अनेक गीतांजलि
भारतभूमि के कर्मवीर बनकर ही
दी जा सकती है उन्हें श्रद्धांजलि

ऋतिक शुक्ला
21/49333

लगता है देश में बदलाव आएगा,
भगत सिंह जैसा फिर से कोई सरदार आएगा

थम जाएंगी यह भ्रष्टाचार की आँधी,
जन्म लेगा फिर से कोई सत्याग्रह वाला गांधी

अब बेईमानों और गद्दारों को भी आएगा
होश,क्योंकि जाग उठेगा
फिर से कोई सुभाष चंद्र बोस

इन सबकी वजह से तुम हुए हो आज़ाद,
वन ना मिल पाता तुम्हें स्वतंत्रता का स्वाद ||

इन्होंने हमारी आजादी में योगदान दिया ,
इसके बदले हमसे भाइचारे के
और कुछ ना लिया था ।

देश की मिट्टी आज भी इनके गुणगान गाती हैं,
दादी माँ इन योद्धाओं की कहानियाँ सुनाती हैं

बतलाते वीरों की गाथा धरती माँ भी बोली,
चन्द्रशेखर झुका नहीं ,मारी खुद को गोली

हर सर्वोच्च स्थान पर इनकी तस्वीरें लग चुकी है,
इनकी ही तो वजह से आज पूरा देश सुखी हैं ॥

इन वीरों की स्मृति में हम प्रगति की तरफ बढ़ चले हैं,
उगता है सूरज शान से चाहे कितने भी दिन ढले हैं।

अपने देश की रक्षा सब वीरों के कारण होती है,
तभी तो भारत की जनता सुख - चैन की नींद सोती है

ईशा शर्मा
21/49081

मै गांधी हूँ लेकिन सत्ता का भूखा नही
देश का वफ़ादार हूँ परतंत्रता मुझे मंज़ूर नही ॥

चाहो जो कहना है कह दो
मैंने कहकर नही करके दिखलाया है।

आज जो स्वतंत्र भूमि मिली है तुम्हें
कइयो ने उसे जान देकर छुड़ाया है॥

आसान है गलती निकलना
तकलीफ़ों के लिए दोष दे जाना।

मैंने अंग्रेजो को बाहर फेखा था
तुम कूड़ा तो फ़ेक कर दिखलाओ॥

हमने स्वतंत्र भारत दिया था
तुम स्वच्छ भारत तो दे जाओ॥

भले मत कहो इसे गांधी जयंती
इसे स्वच्छ भारत का आवरण चढ़ाओ॥

रवि प्रकाश पाण्डेय
21/49143